REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2022

आत्मनिर्भरता एवं भावी आर्थिक विकास की संभावनाएं

डॉ. अंजना सिंह
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र
शासकीय स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय, त्योंथर रीवा (म.प्र.)

सारांश –

कोई समाज, राज्य या देश, जिसे इसकी समूची अथवा आंशिक आर्थिक क्रियाओं के आधार पर परिभाषित किया जाता है। किसी अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाओं के आधार पर वर्ष भर में वस्तुओं एवं सेवाओं का जो उत्पादन किया जाता है उसके मूल्य को सकल राष्ट्रीय उत्पाद कहा जाता है। इस आय का समाज के विभिन्न व्यक्तियों या संस्थाओं के मध्य वितरण किया जाता है जो मजदूरी, लगान, ब्याज, पगार या लाभ के रूप में हो सकता है।

मुख्य शब्द – समाज, आत्मनिर्भरता, आर्थिक विकास एवं संभावनाए।

प्रस्तावना –

पूँजीवादी एवं समाजवादी सभी अर्थव्यवस्थाओं का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाना है और इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर विभिन्न विकास कार्यों और योजनाओं की रूपरेखा निर्मित की जाती है। उपलब्ध संसाधनों के अनुकूलतम शोषण द्वारा उत्पादन एवं उत्पादिता बढ़ाने के प्रयास किये जाते हैं, ताकि भोजन, वस्त्र एवं आवास जैसी अपरिहार्य आवश्यकताओं के साथ–साथ देश के नागरिकों को अन्य सुविधाएँ भी मिल सकें। आज विश्व के सभी राष्ट्र आर्थिक विकास की गति को त्वरित करने में सतत् प्रयत्नशील हैं। विकसित राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों को विकास कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान कर रहे है। वर्तमान समय में विकासशील देशों की ज्वलन्त एवं गम्भीर समस्या गरीबी–निवारण, बेरोजगारी तथा विषमता है जिसके प्रति विकसित राष्ट्र भी चिन्तित एवं निदान हेतु प्रयत्नशील हैं।

आर्थिक विकास एक व्यापक अवधारणा है जिसे विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न रूपों में परिभाषित किया है –

मेयर और बाल्डविन के अनुसार–"आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया हैं जिसमें दीर्घकाल में अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।"

इस प्रकार एलबर्ट, विलयम्सन और वैट्रिक, रास्टोव तथा हार्वे लाइब्रेन्सटीन जैसे अर्थशास्त्रियों का मत है कि – "आर्थिक विकास के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय में वृद्धि होनी चाहिए तथा यह वृद्धि दीर्घकालीन होनी चाहिए।"

प्रो. मेयर तथा बाल्डविन ने अपनी उपर्युक्त परिभाषा के संदर्भ में यह भी बताया है कि यदि विकास की दर जनसंख्या वृद्धि दर से अधिक होती है तो प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि होती है। उनकी इस परिभाषा के आधार पर आर्थिक विकास के सम्बन्ध में निम्न महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं –"यह एक प्रक्रिया है; यह दीर्घकाल की देन है; तथा इसका सम्बन्ध वास्तविक राष्ट्रीय आय से है।"

विकास प्रक्रिया के अन्तर्गत निश्चित शक्तियों की क्रियाशीलता निहित होती है। ये शक्तियाँ दीर्घकाल तक क्रियाशील रहती है और इनमें निश्चित दरों में परिवर्तन होता रहता है। यदि हम प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि इन परिवर्तनों के कारण अर्थव्यवस्था के आधारभूत उत्पादन–साधनों की पूर्ति तथा वस्तुओं की माँग संरचना में परिवर्तन होता है। साधनों की पूर्ति में मुख्य परिवर्तनों के अन्तर्गत अतिरिक्त संसाधनों की खोज, पूंजी संचय, जनसंख्या वृद्धि, उत्पादन की नवीन एवं उत्तम तकनीक का प्रयोग, कुशलता में सुधार तथा अन्य संस्थागत सुधार सम्मिलित होते हैं।उत्पादित वस्तुओं की मांग में मुख्य परिवर्तन जो विकास से सम्बन्धित होते हैं, उसके अन्तर्गत जनसंख्या का आकार एवं आयु संरचना, आय का स्तर एवं वितरण, रुचि एवं अन्य संस्थागत एवं संगठनात्मक व्यवस्था निहित होती है।

विश्लेषण –

आर्थिक विकास को एक 'प्रक्रिया' के रूप में हम तभी परिभाषित करते हैं जहां अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में दीर्घकाल तक वृद्धि होती रहती है। इसलिए वास्तविक राष्ट्रीय एवं दीर्घकाल पर भी विचार करना आवश्यक है। अतः जब हम आर्थिक विकास में वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि की बात करते हैं तो इसका अभिप्राय यह होता है कि सकल उत्पादन एवं सकल राष्ट्रीय आय के साथ ही साथ प्रति व्यक्ति आय में भी लगातार वृद्धि होनी चाहिए तथा अर्थव्यवस्था में तैयार वस्तुओं एवं सेवाओं के योग से है। यद्यपि कि राष्ट्रीय आय उपभोक्ता एवं पूंजीगत वस्तुओं के मूल्य सूचकांक से सम्बन्धित होती है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय आय में वृद्धि वास्तविक रूप से तभी कही जायेगी जब राष्ट्रीय आय की वृद्धि मूल्य स्तर में वृद्धि की तुलना में अधिक हो जिससे कि आम जनता बढ़ी हुई आय का उपयोग अधिक वस्तुओं एवं सेवाओं को प्राप्त करने में कर सके। आर्थिक विकास की दृष्टि से शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि को स्थिर रूप में कायम रखना चाहिए अन्यथा अल्पकालीन विस्तार, जैसा कि व्यवसाय चक्र में होता है। उसके परिणाम दूसरे हो सकते है, अर्थात् जो अपने से ऊँचे स्तर की नहीं बनाये रख सकती, उसे आर्थिक विकास की कोटि में नहीं गिना जा सकता है। आर्थिक विकास उसी दशा में कही जा सकती है जबकि दीर्घकालीन रूप में वास्तविक राष्ट्रीय आय की वृद्धिमान प्रवृत्ति को बनाये रखा जा सके।

प्रो. विलियम्सन एवं बैट्रिक के अनुसार – "आर्थिक विकास का अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसके अन्तर्गत किसी प्रदेश का क्षेत्र के निवासी उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग प्रति व्यक्ति वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में सतत् वृद्धि के लिए करते हैं।

प्रो. रास्टोव का विचार है कि – "आर्थिक विकास पूंजी एवं कार्यशील शक्ति तथा जनसंख्या वृद्धि के बीच एक ऐसा सम्बन्ध है जिससे प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि होती है।"

इसी प्रकार प्रो. लेविस एवं प्रो. लोबोन्सटीन भी प्रति व्यक्ति आय के आधार पर ही आर्थिक विकास को परिभाषित करते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने से ऐसा लगता है कि ये सभी परिभाषाएँ आर्थिक विकास की अवधारणा को राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय तक ही सीमित रखती हैं क्योंकि सामान्य कल्याण में वृद्धि, जो कि आर्थिक विकास की एक प्रमुख विशेषता है, को नजरन्दाज किया गया है। अतः कुछ अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास को व्यापक एवं व्यावहारिक सन्दर्भ में परिभाषित करने का प्रयास किया है जो प्रति व्यक्ति आय, राष्ट्रीय आय या उत्पादन आदि तक ही सीमित न रहकर सामान्य कल्याण में वृद्धि, सामाजिक–आर्थिक, नैतिक तथा अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तनों से आर्थिक विकास को सम्बोधित करते हैं। इसी श्रृंखला में कहा जाता है कि – "आर्थिक विकास एक बहुमुखी धारणा है जिसमें केवल मौद्रिक आय में ही वृद्धि नहीं होती, बल्कि वास्तविक आदतों, शिक्षा, जनस्वास्थ्य, अधिक आराम तथा पूर्ण सुखमय जीवन को निर्धारित करने वाली समस्त सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में सुधार होता है।"

इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिवेदन में कहा गया है कि – "विकास मानव की भौतिक आवश्यकताओं से ही नहीं, वरन् उसके जीवन की सामाजिक दशाओं की उन्नति से भी सम्बन्धित होता है। विकास का अर्थ केवल आर्थिक वृद्धि ही नहीं, बल्कि इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थागत तथा आर्थिक परिवर्तन निहित है।" इस विचारधारा के अर्थशास्त्रियों का मत है कि आर्थिक विकास सामाजिक न्याय के साथ–साथ हो तथा आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता जैसे आधारभूत तथ संस्थागत कारकों का भी इसमें समावेश

होता है। अतः उक्त सभी तथ्यों को समाहित करते हुए आर्थिक विकास की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि "आर्थिक विकास की प्रक्रिया का आशय अर्थव्यवस्था के प्रमुख सामाजिक, संस्थागत तथा संगठनात्मक परिवर्तनों से है जिनका उद्देश्य संरचनात्मक परिवर्तनों द्वारा अर्थव्यवस्था के मूलभूत सामाजिक तथा बहुमुखी उद्देश्यों को प्राप्त करने से है जिसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में स्वतः आत्मनिर्भरता एवं भावी आर्थिक विकास की संभावनाएं पैदा हो जाए।" परन्तु आज आर्थिक विकास की परम्परागत धारणा, जो विकास को आर्थिक रूप से परिभाषित करती है, से भिन्न देखना आवश्यक हो गया है। इक्कीसवीं सदी में आर्थिक विकास को राष्ट्रीय आय, प्रति व्यक्ति आय एवं उत्पादन, संस्थागत एवं संरचनात्मक परिवर्तन से आगे बढ़कर निर्धनता निवारण, बेरोजगारी उन्मूलन, वितरणात्मक न्याय तथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं लिंग समानता के उच्च स्तर को प्राप्त करने से सम्बन्धित किया जा रहा है। आज विकास प्रक्रिया केवल आर्थिक पहलू को ही नहीं, बल्कि जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर रही है। विकास प्रक्रिया गैर–आर्थिक क्षेत्रों में, यथा सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक पक्षों को भी प्रभावित करती है। अतः आर्थिक विकास की इसी संकल्पना के आधार पर भारतीय नियोजन प्रक्रिया में सामाजिक आर्थिक उत्थान हेतु प्रयास किये जा रहे हैं।

निष्कर्ष –

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आर्थिक विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों को आर्थिक विकास के निर्धारक कारक या घटक कहा जाता है। इन्हें हम आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के उपाय भी कहते हैं। इनमें कुछ को प्रधान चालक कहा जाता है जो कि आर्थिक विकास की क्रिया का आरम्भ करते हैं कुछ विद्वान् इन कारकों या उपायों को गौण या सहायक अथवा आर्थिक एवं अनार्थिक दो वर्गों में बाँटकर अध्ययन करते हैं अनार्थिक कारकों या उपायों के अन्तर्गत राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय तत्व आते हैं। आर्थिक एवं अनार्थिक सभी कारक आर्थिक विकास को अपने–अपने तरीके से प्रोत्साहित एवं प्रभावित करते हैं। राज्य शासन वित्तीय विकेन्द्रीकरण के लिए अपने स्तर पर प्रयासरत है, इसी प्रक्रिया को ग्रामीण स्तर पर विद्यमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए स्थानीय राजस्व के संग्रहण के माध्यम से आगे बढ़ाया जाना चाहिये जिससे स्थितियों में सुखद बदलाव लाया जा सके।

संदर्भ –

- D. Bright Singh, Economic Development, page 5.
- G.M. Meir and R.E. Baldwin, Economic Development : Theory, History and Policy, page 3.
- विकासशील देशों की समस्यायें, भारत के सन्दर्भ में – म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 1997।
- रोजगार निर्माण एवं रोजगार समाचार पत्र ।
- आगे आये लाभ उठाये – जनसम्पर्क विभाग का प्रकाशन, 2000।
- ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का एक्शन प्लान वर्ष 2000–2001, मध्यप्रदेश शासन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग।

डॉ. अंजना सिंह
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र, शासकीय स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय, त्योंथर रीवा (म.प्र.)